पाठ्य सामग्री

द्वितीय पत्र, B.A. Part-I (Hon's)

(एशिया - प्रादेशिक अध्ययन)

Unit-IV

Gulam Haider (H)-D 786 C

Fishing Industry of Japan

प्राचीन काल से ही मनुष्य के भोजन पदार्थ में मछली का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ-साथ मनुष्य कृषि तथा उद्योग द्वारा तरह-तरह के भोजन पदार्थ करता रहा है। परन्तु आज भी भोजन पदार्थ में मछली का प्रमुख स्थान है। पकड़ी हुई मछलियाँ अधिकांशतः भोजन के काम में तो आती ही हैं, इसके अलावे तेल खाद उर्वरक आदि की इस्तेमाल में भी आती हैं। प्राचीन काल में मछली का शिकार भाले बरछी और तीर कमान से किया जाता था लेकिन आधुनिक युग में मछलियाँ बड़े-बड़े जालों द्वारा पकड़ी जाती हैं। ये जाल विभिन्न प्रकार के होते हैं, जिनमें ट्रौल (Trawll) सीन (Seine) तथा ड्रिफ्टिंग नेट (driftingnet) उल्लेखनीय हैं। मछलियों का लगभग 40 हजार जातियाँ होती हैं।

जापान की भूमि जापानी लोगों का पेट नहीं भर सकती। भूमि से आश्रय न पाकर जापानी लोग समुद्र की ओर आकर्षित हुए। समुद्र ने जापानी लोगों को आश्रय दिया। भोजन के लिए मछली प्रदान कर जापानियों को भूखों मरने से बचा लिया। इसी कारण जापान में प्रत्येक प्रकार के भोजन में मत्स्य का प्रमुख स्थान है। इस लिए कहा जाता है कि मत्स्य ग्रहण इस देश की भोजन पूर्ति का मेरुदण्ड है। आज भी जापान की 80% जनसंख्या का भोजन मछलियों द्वारा प्राप्त होता है। जापान के 15 लाख व्यक्ति मत्स्य ग्रहण कार्य में लगे हुए हैं। इनमें 5 लाख से भी अधिक स्त्रियाँ और बच्चे हैं। ये लोग 4 लाख से भी अधिक छोटी-छोटी नावों द्वारा मत्स्य ग्रहण करते हैं। आज कल भाप तथा पेट्रोल से चलने वाली नावों का भी प्रयोग होने लगा है। सरकार ने आवश्यक प्रतिस्पर्धा रोकने के नियम बना दिये हैं कि 70 जाल से अधिक प्रयोग करने वाली नावों का उपयोग न किया जाय।

इस प्रकार से पकड़ी गई मत्स्यों का भार 40 लाख मैट्रिक टन लगभग होता है। समस्त संसार का आधा मत्स्य ग्रहण जापानी मछेरों द्वारा होता है। इस लिए संसार में मत्स्य ग्रहण के कार्य में जापान का स्थान सर्वप्रथम है। जापान में मछली का प्रति व्यक्ति उत्पादन लगभग 100 पौंड है, और भोजन प्रति व्यक्ति मछली का खपत 65 पौण्ड है।

जापान में मछली उत्पादन के कारण

(1)— कृषि भूमि की कमी एवं जनसंख्या की अधिकता के कारण जापान के निवासियों को अपनी उदर पूर्ति के लिए समुद्र की ओर आकर्षित होना पड़ा।

(2)— जापान की समुद्रिक स्थिति होने के कारण यहाँ के निवासी प्राचीन काल से ही कुशल नाविक हैं, जिससे इस व्यवसाय में सहायता मिली है।

(3)— जापान का अधिकांशतः तट कटा फटा है इस लिए अनेक मछली पकड़ने का केन्द्र आसानी से बना लिये गये हैं।

(4)— गर्म क्यूरोसीवो तथा ठंडी क्यूराइल धारा के आस पास में मिलने के कारण यहाँ पर्याप्त मात्रा में प्लैंकटन मिल जाता है, जिस पर आधारित अनेक मछलियों के भंडार मिलते हैं।

(5)— जापान की जलवायु इस व्यवसाय के विकास में बहुत सहायक है। शीतोष्ण जलवायु होने के कारण यहाँ मछलियाँ जल्द खराब नहीं होती हैं।

(6)— प्रशीतित्र गृह (Refrigerate Store) तथा वातानुकूल (Air-conditional) नावें बना ली जाती हैं। इससे इस व्यवसाय में भी सुविधा मिलती है।

(7)— जापान के निवासियों का एक मात्र भोजन चावल तथा मछली है। जापान की 80% जनसंख्या इस भोजन का प्रयोग करती है।

(8)— यहाँ पर उत्पन्न मछलियों की माँग विश्व के अनेक देशों में है।

(9)— उत्तरी जापान की जलवायु कृषि योग्य नहीं है अतएव इस भाग में मत्स्य उत्पादन अधिक किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(10) — अत्यधिक मछलियों की खपत तथा निर्यात के कारण जापान में मछलियों का उत्पादन बहुत अधिक किया जाता है।

(11) — आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों, नवीन आविष्कारों तथा विकसित ट्रॉलरों के प्रयोग से मत्स्य उत्पादन में वृद्धि हुई है।

(12) — जापानी बौद्ध है। इनका धर्म माँस भक्षण का निषेध करता है, अतः मछली इनके लिए माँस का स्थान बन गयी है।

जापान के मुख्य मछली उत्पादन क्षेत्र (Chief Fishing Areas)

जापान के निवासियों का समुद्र से प्राचीन काल से सम्पर्क होने के कारण जापान में मछलियाँ लगभग समस्त भागों में पकड़ी जाती हैं। जापान के समुद्र तट पर ~~सहस्त्रों~~ सहस्त्रों मछुआरों की झोपड़ियाँ तथा मछली उत्पादन के केन्द्र स्थापित हैं। समुद्र तट के निकट तथा दूर अनेक नावें, स्टीमर तथा ट्रॉलर मछली पकड़ते हुए दिखाई देते हैं। उत्पादन के दृष्टि से जापान में तीन प्रमुख मछली उत्पादन क्षेत्र हैं।

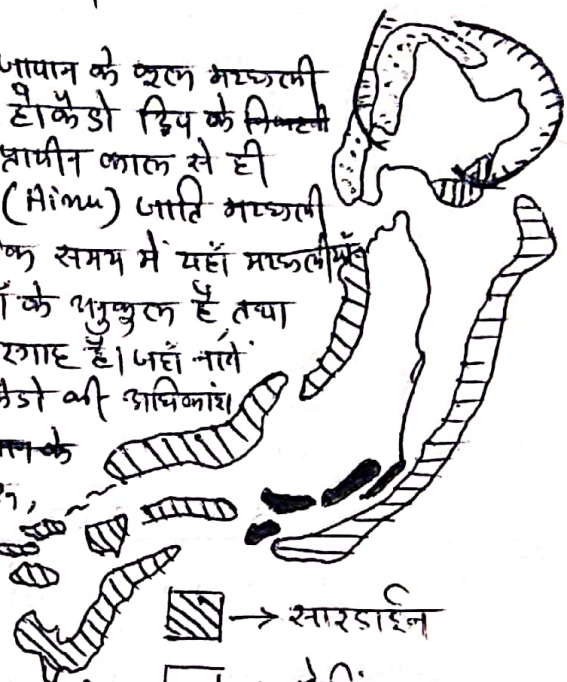

1.— HOKAIDO REGION :→ यह क्षेत्र जापान के कुल मछली उत्पादन का लगभग 40% भाग उत्पन्न करता है। होकैडो द्वीप के ~~निकटवर्ती~~ निकटवर्ती भाग में मछली पकड़ने का व्यवसाय प्राचीन काल से ही प्रचलित है। यहाँ पर निवास करने वाली प्राचीन ऐनू (Ainu) जाति मछली पकड़ने के कार्य में बहुत कुशल थी। लेकिन आधुनिक समय में यहाँ मछलियाँ वैज्ञानिक ढंग से पकड़ी जाती हैं। यहाँ की जलवायु यहाँ के अनुकूल है तथा समुद्र कटा फटा होने के कारण यहाँ अनेक प्राकृतिक बंदरगाह हैं। जहाँ नावें सुरक्षित खड़ी रहती हैं। ~~कृषि भूमि~~ की कमी के कारण होकैडो की अधिकांश जनसंख्या मत्स्य उत्पादन में लगी हुई है। ~~यह क्षेत्र जापान के~~ प्रमुख मछली पकड़ने वाले केन्द्र हैकोडेट, ओतारु, समोरो, वकाना तथा अवाशिरी हैं।

2.— NORTH EASTERN HONSHU REGION

उत्तरी हान्शू का पूर्वी समुद्र तटीय क्षेत्र जापान का प्रमुख मछली उत्पादक क्षेत्र है। यहाँ से जापान का कुल मछली उत्पादन का 25% भाग प्राप्त होता है। यहाँ पर पकड़ी जाने वाली मछलियों के मध्य तथा द० हान्शू के घनी आबादी वाले क्षेत्र में माँग अधिक है। यहाँ पर पकड़ी जाने वाली मछलियाँ सुखाकर डब्बों में बंद कर के तथा उनका आचार डालकर ~~विदे~~ विदेशों को निर्यात भी जाती हैं। यहाँ प्रमुख मछली पकड़ने का केन्द्र हैमीनोहो, अकीता, ओमोरी, सेंडाई, ~~कोमेशी~~, ~~केसेनुमा~~, मियाके, नीगाटा, इना, शिओगामा, इशीनोमाकी इत्यादि हैं।

3 KYUSHU SHIKOKU & SOUTH HONSHU REGION :→ यह क्षेत्र जापान के कुल मछली उत्पादन का 30% भाग उत्पन्न करता है। इस क्षेत्र में आन्तरिक मछलियों का अपार भंडार है। यह क्षेत्र सामुद्री तूफानों से सुरक्षित है। इस लिए यहाँ मछलियाँ पकड़ने का कार्य बड़े पैमाने पर होता है। इस क्षेत्र में आन्तरिक सागर तट क्षेत्र तथा द० प० तट क्षेत्र ~~सम्मिलित~~ सम्मिलित हैं। उथला तथा स्थिर समुद्र होने के कारण यहाँ असंख्य संख्या में मछलियाँ अंडे देने आती हैं। यहाँ के प्रमुख मछली उत्पादन केन्द्र ओयासी, टोयाट, फुकोका, नागासाकी, इकामाटसू, शिमोनोसकी इत्यादि हैं।